Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
April to June 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLVI, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

शिक्षक-शिक्षा का पुनरूद्धार : शिक्षक-शिक्षा कार्यक्रम की भूमिका

केशव लाल गुप्ता*

* सहायक आचार्य, भगवती शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय,गंगापुर सिटी एवं शोधार्थी, कोटा विश्वविद्यालय, कोटा (राज.) भारत

प्रस्तावना – शिक्षा बहुत समय से लोगों का सामाजिक बहिस्कार करने के साधन के रूप मे काम करती रही है। इस तरह से इसने बिषमता को खत्म करने एवं बेहतर समाज के निर्माण के संविधान के उद्देश्यों को प्राप्त करने मे बाधा का ही काम किया है। आज हमारी शिक्षा व्यवस्थाओं मे शिक्षक को सुचना प्रदान करने वाला और विद्यार्थियों को चारदीवारी से घिरे बंद कक्ष मे चुपचाप बिना किसी प्रतिक्रिया के उन सुचनाओं को प्राप्त करने वाले एक मूक श्रोता के रूप मे देखा जा रहा है।

हमारी शिक्षा की सबसे बडी समस्या इसके द्वारा बच्चों पर लादा गया बोझ है। यह बोझ पाठ्यचर्चा की असंबद्ध संरचना का परिणाम तो है ही जिसे बच्चों के जीवन और उनकी संस्कृति से कोई सरोकार नही है परन्तु यह शिक्षक की अपर्याप्त तैयारी का भी परिणाम है क्योंकि शिक्षक बच्चों से ठीक से जुड नहीं पाते और न हीं बच्चों की जरूरत के अनुसार अपनी तरफ से रचनात्मक एवं जरूरी पहल करते है। हमारी शिक्षा व्यवस्था मे जहां बच्चे को पर्याप्त जगह देने की बात स्वीकार की जा रही है वहीं शिक्षको को अभी भी उचित जगह नहीं दी जा रही है। शिक्षको को ज्ञान उत्पन्न करने और सोचने बाले पेशेवर के रूप देखा जाना जरूरी है।

शिक्षकों का सबलीकरण ऐसा हो कि बच्चे के द्वारा घर व परिवेश मे सीखे गये अनुभवों को पहचान सके तथा उन्हे महत्व दे सके और तद्अनुसार उसे खोजने सीखने व विकसित होने का अवसर प्रदान कर सके। इसलिए शिक्षकों को अलग ढंग से प्रशिक्षित करने की जरूरत महसूस की जा रही है ताकि वे समता व सामाजिक परिवर्तनों के प्रश्नो पर स्वयं को उचित ढंग से खड़ा कर सके। इस संदर्भ मे चट्टोपाध्याय समिती (1983-85) ने कहा है 'यदि स्कूल शिक्षको से उम्मीद की जाती है कि वे पढ़ाने के उपागम मे क्रांति लाए तो वह क्रांति पहले शिक्षक शिक्षा के कोलेजो मे होनी चाहिऐ।'

सेवापूर्व शिक्षक शिक्षा-एक विवरण – कोठारी शिक्षा आयोग (1964-66) से ही यह बात की जाने लगी कि शिक्षा मे गुणात्मक सुधार के लिए शिक्षकों को बतौर पेशेवर तैयार करना अत्यंत जरूरी है। गुणवत्ता को शिक्षक शिक्षा कि आत्मा घोषित करते हुऐ आयोग ने सुझाव दिया कि विश्वविद्यालयों मे सामान्य व पेशेवर शिक्षा के समाकलित पाठ्यक्रम (इन्टीग्रेटेड कोर्स) पढ़ाया जाऐं जिसमे स्वाध्याय और चर्चा तथा इन्टर्नशिप के द्वारा अनुभव कार्यक्रम का महत्वपूर्ण स्थान हो।

चटोपाध्याय समीति (1983-85) ने नए शिक्षक की अभिकल्पना करते हुऐ लिखा कि 'अगर शिक्षक शिक्षा को नऐ शिक्षकों की भूमिका और दायित्वों के संदर्भ मे प्रसांगिक बनाता है तो माध्यमिक स्तर के शिक्षक के प्रशिक्षण की अवधि 12वीं के बाद 5 बर्ष की होनी चाहिऐ' आयोग ने आगे लिखा कि इससे सामान्य एवं व्यवसायिक शिक्षा को एक समान भाव से आगे चलाया जा सकता है। आयोग ने सिफारिश की कि आरंम्भ मे हम 4 साल कि एकीकृत शिक्षा का कार्यक्रम आरंम्भ कर सकते हैं। यह भी सम्भव हो सकता है कि वर्तमान समय मे चल रही विज्ञान एवं कला के कुछ कोलेज अपने कार्यक्रमों के साथ शिक्षा विभाग शुरू करे और अपने कुछ विद्यार्थियों से शिक्षक शिक्षा के अध्ययन के लिए कहे।

राष्ट्रीय शिक्षा नीती 1986 की समीक्षा करते हुऐ आचार्य राममूर्ती समिति (1990) ने कहा कि 'शिक्षक शिक्षा मे इन्टर्नशिप (अंत: शिक्षुकता)का ढांचा अपनाया जाना चाहिऐ' क्योंकि इन्टर्नशिप का ढ़ाचा पूरी तरह से वास्तविक परिस्थितियों मे किये गये व्यावहारिक अनुभवों पर आधारित होता है जिसमे कुछ समय के लिए शिक्षण का अवसर देकर अध्यापक के गुणों के विकास का अवसर दिये जाते है।

यशपाल समिति कि रिपोर्ट 'शिक्षा बिना बोझ के' (1993) ने माना कि शिक्षकों कि तैयारी के अपर्याप्त अवसर से स्कूल मे अध्ययन अध्यापन की गुणवत्ता प्रभावित होती है। इन कार्यक्रमों कि विषयवस्तु इस प्रकार पुन: निर्धारित की जानी चाहिऐ कि स्कूली शिक्षा की बदलती आवश्यकताओं के संदर्भ मे उसकी प्रासांगिकता बनी रहे। इन कार्यक्रमों से शिक्षक प्रशिक्षकों में स्वयं शिक्षण मे स्वतंत्र चिन्तन की क्षमता के विकास पर जोर होना चाहिए, दुर्भाग्यपूर्ण ढंग से गतिविधि आधारित शिक्षण (ABL) आनंददायक शिक्षक, टीम टीचिंग, सहयोगी एवम् सहकारी अधिगम, प्रदर्शन और सहभागिता प्रशिक्षण की जो आवश्यकता है, उसे अवसर व्याख्यान के माध्यम से ही पढ़ाया जाता है।

शिक्षक-शिक्षा-नई पहल :

1. आज पेशेवर शिक्षक प्रशिक्षक तैयार करने कि कोई स्थाई व्यवस्था नहीं है। विशेषकर पूर्व प्राथमिक और प्राथमिक स्तर। इन स्तरों के लिए ज्यादातर शिक्षक प्रशिक्षक माध्यमिक स्तर के लिए प्रशिक्षित होते है,जैसे M.Ed.
2. शिक्षक शिक्षा को स्कूली व्यवस्था कि आवश्यकताओं के प्रति ज्यादा संवेदनशील होना पड़ेगा इसके लिए शिक्षक शिक्षा मे आमूलचूल बदलाव की आवश्यकता है,और सेवापूर्व शिक्षक प्रशिक्षण मे ऐसे शिक्षकों के निर्माण की आवश्यकता है जो वे सीखने सिखाने की परिस्थितियों मे उत्साहवर्द्धक संयोगी तथा सीखने को सहज बनाने वाले बने तथा जो अपने विद्यार्थियों को प्रतिभाओं की खोज-उनकी

शारीरिक तथा बौद्धिक क्षमताओं को पूर्णतया जानने, उनके चरित्र के विकास मे तथा जिम्मेदार नागरिक की भूमिका निभाने मे समर्थ बनाऐ।

3. ऐसे शिक्षक तैयार हो जो शिक्षा के सामाजिक संदर्भो के प्रति जबावदेह और संवेदनशील बने।
4. शिक्षक बच्चों का ख्याल रख सके और उनके साथ रहना पसंद करे।
5. व्यक्तिगत अनुभवों से अधिगम करा सके।
6. सीखने के तरीके समझे,ज्ञान को चिंतनशील सीखने की सतत प्रक्रिया माने।
7. ज्ञान को पाठ्यपुस्तको के बाहरी ज्ञान के रूप मे न देखकर अनुभव के संदर्भ मे देखे।
8. ऐसा शिक्षक बने जो ग्रहणशील हो और लगातार सीखता रहे तथा समाज और विश्व को बेहतर बनाने की दिशा मे अपनी जिम्मेदारियों को समझ सके।
9. उसका भाषाई ज्ञान और दक्षता का आधार ठोस हो।
10. अपना पेशेवर उन्मुखीकरण करने के लिए प्रयास करता रहे।
11. शिक्षक–शिक्षा मे ऐसे शिक्षक तैयार हो जो समझ सके कि विद्यार्थी अधिगम का अनुभव सक्रिय जुड़ाव और सहभागिता के आधार पर करते है अर्थात विद्यार्थी अपने ज्ञान का अपने तरीके से निर्माण करते है। इसलिए अधिगम स्त्रोतो की तलाश, विचारों का चिंतन विश्लेषण व आत्मसात्मीकरण होना चाहिए।

शिक्षक–शिक्षा महाविद्यालय एवं शिक्षक प्रशिक्षकों की भूमिका:

1. शिक्षक की मुख्य भूमिका सीखने के मार्ग मे सहायता करने वाले की होती है, शिक्षक वह होता है जो विद्यार्थियों को उनकी क्षमताओं की पहचान कराऐ, उनके व्यक्तिगत अनुभवों का राष्ट्र के संदर्भ मे उपयोग हो उन्हे सृजनशील चिन्तनशील बनने के लिऐ अवसर प्रदान करे।

   शिक्षक को समझ लेना चाहिए की विद्यार्थी स्कूल मे अब उसे ज्ञान के स्त्रोत के रूप मे नही देखते, मीड़िया और आई.सी.टी. ने उनके सामने अत्यंत संभावनाऐ खोली है। फिर भी बहुत सारी बातों को विद्यार्थि को अर्थपुर्ण ढंग तथा सकारात्मक ढंग से सिखाना शिक्षक के हिस्से मे ही आता है। अभि आई.सी.टी. जैसी सुविधाओं तक सभी विद्यार्थियों की पहुंच होने मे समय लगेगा। शिक्षक को सभी परिस्थितियों (आई.सी.टी. साथ व बिना आई.सी.टी. मे प्रभावी रहने के लिए दक्ष होना आवश्यक है।
2. शिक्षक को क्रिया आधारित अधिगम (ABL) की प्रकृति और गतिशीलता को समझना चाहिए।
3. आज शिक्षक और शिक्षा जैसे शब्दों के पारम्परिक अर्थ को बदलेजाने की जरूरत है क्योंकि शिक्षण मे यह निश्चित होता है कि एक शिक्षक क्या करता है ? जबकि आज शिक्षा व्यवस्था मे आवश्यक है कि शिक्षक समझे छात्र कैसे और क्या चाहता है ?
4. शिक्षक को यह समझ लेना चाहिऐ कि सभी विद्यार्थी अपने अपने ढंग से सीखते हैं और ऐसी कोई एक पद्धति नहीं है जो सभी विद्यार्थियों को एक ही ढंग से सिखा सके। हर शिक्षक को बोद्यगम्य अभ्यास के द्वारा अलग अलग विद्यार्थियों के सीखने के तरीके पहचानने होंगें।

शिक्षक शिक्षा का कैसे हो पुनरूद्धार: एक दृष्टि:

1. सभी प्रकार के शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम पूर्व–प्राथमिक, प्राथमिक, माध्यमिक को विश्वविद्यालयों मे संबद्ध कर दिया जाऐ।
2. शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम को लागू करते समय प्रशिक्षकों, विद्यार्थी शिक्षको और छात्रों को पूरी आजादी दी जानी चाहिए कि उन्हे जो उपयुक्त लगे कर सकतें हैं।
3. 10+2 स्तर की पढ़ाई के बाद शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम सिद्धांत: 4 वर्ष का हुआ है,जो एक सकारात्मक कदम है। इसके विशिष्ट चरण मे व्यावसायिक विकास की विशेषता का भी प्रावधान हो।
4. शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम को इस तरह पुनर्निर्मित किया जाए कि वह स्कूल पाठ्यचर्चा के नवीनीकरण और अपने क्षेत्र विशेष के संदर्भ मे प्रासांगिक हो सके।
5. एन.सी.ई.आर.टी. और एन.सी.टी.ई. के बीच उच्च स्तरीय सलाहाकार संबंध हो ताकि स्कूली पाठ्यचर्चा और शिक्षक शिक्षा को जोड़ा जा सके।
6. शिक्षक प्रशिक्षक को न केवल पैराडाइम (मिसाल) बदलाव की समझ हो बल्कि वे इसके वाहक भी बने। इसके लिए बेहतर अभिमुखीकरण कार्यक्रमों की आवश्यकता है। जिससे वे स्वयं को नवीन परिस्थितियों के लिए तैयार कर सके।
7. शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम मे अधिगम अनुभव विद्यार्थी प्रधान होने चाहिऐं जिससे विद्यार्थियों मे तर्क क्षमता, ज्ञान निर्माण और सूझ का विकास बेहतर ढंग से हो सके, इन सब के लिऐ शिक्षक विद्यार्थियों को शिक्षक प्रशिक्षक प्रशिक्षित करने का जिम्मा उठाऐ।

सारांश – शिक्षक शिक्षा महाविद्यालयों मे इस प्रकार के शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रम तैयार किया जाऐं कि विद्यार्थी अध्यापकों को प्रत्यक्ष अनुभव के पर्याप्त अवसर मिलें। केवल पढ़ने या भाषण सुनने से शिक्षक शिक्षा का पुनरूद्धार नही होता जिससे विद्यार्थी अध्यापक देखने, सोचने, विचार विमर्श करने, सोचने समझने तथा अधिगम स्थितियां क्या और कैसे हो इस पर निर्णय ले सके। ऐसा वास्तविक परिस्थितियों के साथ कृत्रिम स्थितियां पैदा करके किया जा सकता है। नया शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम बदली हुई व्यवस्था कि मांग करता है। जिसमे शिक्षक प्रशिक्षक की भूमिका अधिगम को सहज बनाने बाली होगी न की ऐसी जिसमे एक शिक्षक मात्र कोई एक कोर्स पढा रहा है। इसमे आकलन (ASSESSMENT) के लिऐ भी जोर प्रक्रिया मे भागीदारी पर ज्यादा होगा न की परिणामों पर। इसमे विद्यार्थी–शिक्षकों को एसे अनुभव देने होंगे जिसमे वे स्वयं खोजें, चिंतन करे, आलोचनात्मक मूल्यांकन करे, प्रयोग तथा स्वयं द्वारा लिऐ गये निर्णयों की जिम्मदारी ले। ये सभी उन्हे स्कूलों मे प्रभावी ढंग से कार्य करने मे समर्थ बनाते हैं।

शिक्षक–शिक्षा कार्यक्रम ऐसा हो जिसमे विद्यार्थी शिक्षक को विभिन्न प्रकार की अधिगम परिस्थितियों मे काम करना सिखाऐ अंतत: शिक्षा के क्षेत्र मे मांसमीड़िया, आई.सी.टी. और उपग्रह आधारित टी.बी. के शामिल हो जाने से शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रम की भूमिका और महत्वपुर्ण हो गई है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:–

1. शिक्षा आयोग की रिपोर्ट(1964–66) 'शिक्षा एवं राष्ट्रीय विकास', शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार पृ. 622
2. शिक्षा आयोग की रिपोर्ट(1964–66) 'शिक्षा एवं राष्ट्रीय विकास' शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, पृ. 623
3. शिक्षक एवं समाज, चट्टोपाध्याय कमेटी रिपोर्ट, मा. सं. वि. मं., भारत सरकार पृ. 49
4. राष्ट्रीय शिक्षा नीती , मा. सं. वि. मं., भारत सरकार, पृ. 43

5. प्रबुद्ध और मानवोचित समाज की ओर आचार्य राममूर्ति रिव्यू कमेटी रिपोर्ट ,मा. सं. वि., भारत सरकार
6. शिक्षा बिना बोझ के यशपाल कमेटी रिपोर्ट , मा. सं. वि. मं. भारत सरकार पृ. 26
7. 'जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम में शैक्षिक प्रगति एवं सुधार की समीक्षा' (फेस 1 एंड फेस 2) ,साउथ एशियन ह्यूमेन डेवलपमेंट सेक्टर, डिस्कशन पेपर सीरीज 2003, विश्व बैंक पृ. 35
8. कृष्ण कुमार(2002) प्लांड लेसंस एंड अदर प्रोब्लम्स ओफ टीचर ट्रेनिंग इन रिफ्लेक्शन ओफ लेसन प्लानिंग, आई. ए. एस. ई, डिपार्टमेंट ओफ एजुकेशन, दिल्ली विश्वविद्यालय, पृ. 10

****